21 वीं सदी के नए विमर्श में वृद्ध विमर्श

Dr. Rekha
Department of Hindi
Maharani Arts College For Women
Dis: Mysuru State: Karnataka
Ph: 6360997286: 9742962211

21 वीं सदी के उपन्यास दर्पण है विविध आयाम का । प्रस्तुत सदी में समाज एवं परिवार में अनेक विमर्शों को चित्रित किया गया है, जैसे– स्त्री विमर्श, वृद्ध विमर्श, बाल विमर्श, आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, बाल विमर्श तथा अल्पसंख्यक विमर्श आदि । प्रस्तुत आलेख में वृद्ध विमर्श को आधार बनाया गया है । साहित्य में वही चित्रित होता है जो समाज में घटित हो रहा है । आज–कल वृद्धाश्रमों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो रही है । जिसका प्रमुख कारण आज की भागदौड़ भरी जीवन शैली तथा एक पीढ़ी के दूसरी पीढ़ी से विचारों का तालमेल न बैठना है । अधिकतर परिवार में वृद्धों की हालत बहुत दयनीय है । उनके पास यदि पैसे हैं तो ही उनको स्थान, मान मिलता है, अन्यथा संतान पर वह बोझ बन जाते हैं । आज की संतान पैसों से अमीर तथा प्रेम से गरीब है । उनके पास अपने माता–पिता को देने के लिये कुछ भी प्रम नहीं है । 21 वीं सदी के अनेक उपन्यसों में वृद्धों की दयनीय दशा का वर्णन है । जिसका वर्णन अग्रलिखित उपन्यासों में देखने को मिलता है ।

'भगदड' उपन्यास में महावीर प्रसाद तथा उनकी पत्नी ने अपने बेटे को पढ़ाया लिखाया। मगर बेटे को मुंबई के चकचौंध ने अपनी ओर इस प्रकार आकर्षित कर लिया कि वह मुंबई का ही बन कर रह गया । जब बेटे से मिलने दंपति बेटे के घर आते हैं तो उस समय पुत्र के घर में ही स्वयं को मेहमान जैसा अनुभव करते हैं । अपने बेटे के घर दोनों पति–पत्नी को अपनी बहू द्वारा वैसा स्नेह नहीं मिला जैसे आम परिवार में मिलता है जैसे– "दरवाजा बहू ने खोला था । उन दोनों को देखकर एक मुस्कुराहट बिखेरी उसने और फिर सामान की ओर नजर घुमाई ।"[1] पोती भी दादा–दादी को मेहमान नाम से संबोधित करती । महावीप्रसाद ने इसका अंदाजा लगा लिया कि उनका आना बहू श्वेता को अच्छा नहीं लगा था । कृष्णा अपने माता–पिता से बहुत प्रेम करता था । किंतु उसके एक गलत निर्णय के कारण उसे जीवनभर पछताने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था । जैसे ही श्वेता को पता चलता है कि ससुर को कैंसर होने की आशंका है वह मौन हो जाती है । इधर श्वेता सामने के कमरे में आई और उसने एक झटके में हर्षा को उठा लिया । कृष्णा की माँ से उसका यह व्यवहार छिपा नहीं रहा । बाबूजी भी विचलित हुए ।"[2] कृष्णा की माँ के लिए उनके घर में मौजूद कुछ चीजें नई थी । उसी वक्त वह अपना कुतुहल का समाधान करने के लिए उसका दाम पूछ लेती है । श्वेता फ्रिज लेने की इच्छा प्रकट करते हुए कहती है– "नौ हजार में तुरंत रकम बताकर श्वेता अचकचायी । फिर संवारते बोली अगली बार के फेस्टिवल एडवांस में कुछ रकम जोड़कर ले लूंगी ।"[3] जब कृष्णा की माँ ने अपने मन की बात कही कि अपने पति से बात करके पैसों की व्यवस्था करेगी, क्योंकि पैसों से भी अधिक महत्व परिवार का सुख है तो "श्वेता पलटकर बोली नहीं... नहीं... रहने दीजिए । किसी तरह हम कर लेंगे । श्वेता का यह वाक्य फिर पराये पन की तोप दाग गया । टुकड़े–टुकड़े हो गई कृष्णा की माँ फिर शांत और गुमसुम ।"[4] महावीर प्रसाद यह सब अनुभव कर रहे थे किंतु वे मौन थे । उन्होंने बेटे की सारी मनोदशा को आंका था । किंतु श्वेता पैसे एवं अपनी सुख–सुविधा के पीछे भाग रही थी । अपनी माँ की सलाह के अनुसार उसने दोनों को घर का काम करवाने के उद्धेश्य से मुंबई रहने के लिए बुलाया था महवीर प्रसाद की पत्नी नौकरानी की तरह घर का सारा काम करने लगी थी । "महावीर प्रसाद की नजर जौहरी की तरह थी । वह आदमी को देखते ही उसके दिमाग का हालचाल नाप सकते थे ।"[5] श्वेता की माँ का भी सच उनके

सामने आया । उनको पता चला कि उन्हें वहाँ पर बुलाने का कारण स्नेह या प्रेम नहीं बल्कि पैसा था । अपनी पत्नी को घर का सारा काम करती देख दुःखी होकर उन्होंने वापस जाने का निर्णय लिया । "महावीर प्रसाद को अप्रत्यक्षतः यह समझते देर नहीं लगी कि उन्हें क्यों इतनी आत्मीयता से बुलाया गया है । इस साजिश से उन्हें चिढ़ हुई । कृष्णा को भी शायद यह पता नहीं होगा ।"[6] हर बहू को अपनी सास–ससुर प्यारे नहीं होते किंतु वह सदैव यह कामना अवश्य करती है कि उसके माता–पिता को खुश रखने वाली लड़की भाई की दुल्हन बने ।

'कुइयाँजान' उपन्यास में वृद्ध विमर्श अनेक स्थान पर चित्रित है जैसे उपन्यास का एक पात्र है शकरआरा । वह पढ़ी–लिखी होने के बावजूद भी अपनी सास को नहीं समझ पाई । जमाल खा की माँ एक सरल व्यक्तित्ववाली महिला थी । उसने अपनी बहू को गलत नहीं कहा, सदैव परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को बदलती आई और परिवार में कभी बेटे और बहू को अलग करने का प्रयास नहीं किया । "शकरआरा की अपनी सास से नहीं पटी थी । ऐसा कोई दिन नहीं था जब सास–बहू में तकरार न होती हो । माँ के खत आने पर भी मियाँ– बीबी में तल्खी हो जाती थी ।"[7] जमाल खाँ को अपनी माँ के लिए बहुत बुरा लगता । किंतु वह शांत इसलिए रहते क्योंकि उनकी माँ ने उनसे यह वचन लिया था की परिवार में बच्चों के लिए जमाल खां अपनी पत्नी को कभी नहीं छोड़ेगा । वह हमेशा अतीत में माँ के वादे याद करते । "अम्मा की खामोशी दिन–ब–दिन गहरी होती चली गई । यहां तक कि बच्चों को उनके पास जाने की मनाही पर भी उन्होंने जबान नहीं खोली । वह शकरआरा को खुला मैदान देकर एक किनारे हट गई थी कि खेलो, जी भरकर खेलो । मुझे अपने बेटे की गृहस्थी नहीं उजाड़नी ।"[8] बेटे से माँ को अपनी बीबी को तलाक देने की बात सुनकर वह वृद्ध महिला अपने सारे दर्द छुपाकर बेटे के सामने खुश रहने का नाटक करती है । शादी के बहाने जो वह एक बार गाँव गई तो वापिस कभी नहीं आयी । उसकी अंतिम इच्छा थी कि उसे गाँव में ही दफनाया जाए ।

इसी उपन्यास में बहू द्वारा अपने ससुर पर किए जाने वाले शोषण का वर्णन है । बहू से बेटा अपने पिता के खान–पान की व्यवस्था करने को कहकर खुद काम पर चला जाता, उसे लगता कि पत्नी पिता का अच्छे से खयाल रखती है । मगर एक दिन डॉक्टर के कहने पर कि खाने की कमी के कारण पिता मर भी सकते हैं । उसने खुद पता लगाना चाहा कि आखिर ऐसा क्यों हुआ । बहू अपने ससुर से कहती है – "अरे कउन–सा रोग लग गवा है जो डॉक्टर की फीस मा पैसा बहाया रहा है बूढ़ा, अब कहत है बासी न खाबे, डॉक्टर मना किए है । तो रहो भूखा हमार का जात है ।"[9] उस वृद्ध को बहू बासी रोटी खिलाती और खुद ताजा आहार खाती । सच्चाई से अवगत होकर बेटा गुस्से से खौल उठाता है । स्वयं जाकर गरम दूध का कुल्हड़ पिता के हाथ में थमाते हुए बोला "ग्वाले को कल से दूध लाने के लिए मना कर देना, पिताजी खुद जाकर दूध पी लेंगे । हिसाब महीने–महीने मैं करूंगा और अगर तुम्हें ताजी रोटी डालने में आलकस होती है तो उसका भी बंदोबस्त हो जाएगा ।"[10] औरत का चेहरा अपमान से लज्जित हो गया । क्योंकि उसकी करनी अब पति के सामने थी और अपने बचाव के लिए उसके पास शब्द नहीं थे । उसकी आंखों में पश्चाताप का पानी था । "वह बुरी औरत नहीं थी, मगर जिस समाज में बूढ़े बोझ समझे जाने लगे हों, उन्हें बेकार की वस्तु समझकर एक किनारे डालने का चलन बढ़ रहो हो, वहाँ पर यह औरत सबसे अलग क्यों व्यवहार करेगी?"[11]

'गिलिगडु' उपन्यास में दो वृद्ध बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी का वर्णन मिलता है । दोनों विदुर थे पत्नी की देहांत ने उन्हें भीतर से अकेला कर दिया था । जसवंत सिंह अपने गांव में ही भले चंगे थे । पत्नी के मरणोपरांत वह परिवार वाले एवं समाज वालों की सलाह के कारण अपने बेटे के पास दिल्ली आने के लिए मजबूर हो जाते हैं । बहू सुनयना को बाबू जसवंत सिंह का घर आना उतना अच्छा नहीं लगा था । बाबू जसवंत सिंह का मानना था कि बहू को जितना खयाल पलतू कुत्ता टॉमी का है, उसमें थोड़ा भी अपने ससुर के लिए नहीं है । जब कभी वे समाचार लगाते तो टॉमी की गुर्राहट बढ़ती जाती । "बहू सुनयना को टॉमी की नाराजगी बरदाश्त न होती । दखल देती हुई उन्हें टोकती– कोई म्यूजिक चैनल लगा दीजिए न बाबूजी । आज तक का क्या है,

चौबीसों घंटे चलता ही रहता है ।"[12] बाबू जसवंत सिंह को अपने बेटे के घर में इतना भी स्वतंत्रता नहीं थी कि उनकी सहायता करने वाले व्यक्ति को अपने घर चाय पर बुला सके । "कानपुर से दिल्ली आए हुए उन्हें अरसा हो गया था। घर की चौखट में दाखिल होते ही वे स्वयं को अपरिचितों की भांति प्रवेश करता हुआ अनुभव करते हैं ।"[13] जसवंत सिंह को बवासीर की बीमारी थी । वे उसी कारण ज्यादा परेशान रहते थे । जब उनकी पत्नी जिन्दा थी तब नौकरानी सुनगुनिया उनका अच्छे से खयाल रखा करती, किंतु इसे ही आशंका की दृष्टि से देखा गया । उनके और नौकरानी के बीच अनैतिक संबंध की भी कड़ी को जोड़ा गया । मगर वे सुनगुनिया को बेटी की तरह मानते थे । उनकी अपनी एक आहार पद्धति थी । सुबह के समय नींबू वाली चाय और दोपहर को दलिया खाना पसंद था उन्हें । जब तक अपने गाँव में रहे तब तक सुनगुनिया ने उनके आहार पद्धति को वैसे ही बरकरार रखा था । जब वह अपने बेटे के घर आये तब बहू द्वारा कोई न कोई बहाना बनाकर आहार पद्धति को टाल दिया गया । "दिल्ली आने के हफ्ते भर बाद बाबू जसवंत सिंह को लगा था कि उन्हें नरेन्द्र से अपनी आपत्ति प्रकट कर देनी चाहिए । खाने में कुछ भी खाना उनके लिए संभव नहीं था । फ्रीज में रखा बासी–कूसी उसकी अम्मा ने कभी कुछ उन्हें नहीं खिलाया, सो पेट को उसकी आदत नहीं ।"[14] इस बात पर बिगड़े नरेन्द्र ने अपने पिता को लंबा–चौड़ा भाषण देते हुए कहा "आइंदा वे अपनी पसंद की गुंजाइश इस घर में न ढूँढे तो बेहतर है ।"[15] इससे वे भीतर तक आहत हो गए थे । उनके साथ एक घटना ऐसी घटी जिसके बारे में उन्होंने कभी सोचा न था । बवासीर के कारण उन्हें अपने पाइजामा में खून के धब्बे दिखे, जिसे वे ठीक कर रहे थे, और सामने वाली खिड़की से पड़ोसन ने देखकर गलत मतलब निकाला । इस पर घर आकर पड़ोसन द्वारा आरोप लगाने पर "बहू सुनयना अपने पिता से इतनी कठोर हो सकती थी! संवाद के लिए कोई गुंजाइश नहीं सीधे–फैसला? घूमते सिर को तकिए में गड़ा बच्चों–से फूट–फूटकर रो पड़े । हिचकियों से लोहे का पलंग थर्राने लगा ।"[16] उस स्थान पर सुनयना के पिता होते तो उनके लिए पुरी दुनिया से लड़ जाती वह । किंतु एक बार भी उस ससुर से यह नहीं पूछा गया कि यथर्थ क्या है? क्यों यह आरोप उन पर आया? वृद्ध के बचाव में न ही बहू ने कुछ कहा और न ही बेटे ने । दोनों ने एक अंजान व्यक्ति की उक्ति को सत्य सिद्ध करके वृद्ध पर ही कटु वाणी का प्रहार करते रहें । उनके दृष्टि में बाबू जसवंत सिंह घर में कूड़े की तरह थे, जिसे हमेशा घर एक कोने में पडा रहना चाहिए । वे सिर्फ पैसों के भूखे थे । मानवीयता उनमें थी नहीं । उतने बडे घर में पिता को रहने के लिए एक कमरा तक नहीं था, उन्हे हाल में ही सोना पडता किंतु बच्चों के सामान रखने के लिए एक अलग कमरे की व्यवस्था घर में थी । ऐसे में बवासीर से पीडित व्यक्ति क्या करता कहाँ अपने पाइजामे के खून के धब्बे को साफ करता? दोनो सुशिक्षित तो थे किंतु सोचने की क्षमता दोनों में नहीं थी । पोते भी बाबू जसवंत सिंह से नजदीकी नहीं बढा सके । उनके लिए वह अपने पिता के पिता थे अतिरिक्त इसके और कुछ नहीं । यह दाईत्व माता–पिता का होता है कि अपने बच्चों को दादा–दादी के संबंध से परिचित कराए । यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है की संबंध में केवल दादा– दादी को ही पराए होने का आभास होता है । नाना–नानी को हमेशा अपने पोता–पोती का प्यार पूर्ण रूप से मिलता है । हर एक बहू का कर्तव्य है कि उसे सास–ससुर को माता पिता का स्थान भले ही न दे किंतु मानवीय मूल्यों को कभी भुलना नही चाहिए।

उसी प्रकार कर्नल स्वामी का भी परिवार था फिर भी बहुत सालों से अकेले रहते थे । परंतु कभी अपना दुःख दूसरों के सामने न बताते । ऐसे में कर्नल की दोस्ती बाबू जसवंत सिंह से होती है । "कर्नल स्वामी ने उन्हें अपने भरे–पूरे परिवार से परिचित कराया था, पत्नी नहीं है । तीन बेटे है, तीन बहुएँ हैं ।"[17] दोस्तों के सामने अपने आपको संसार का सुखी व्यक्ति के रूप में दिखाने वाले कर्नल स्वामी केवल भ्रम में जीवन जी रहे थे । भरे–पूरे परिवार के होते हुए भी उनके लिए कोई नहीं था नितांत एकांत के अलावा । अपने दोस्तों से अपनी बहुओं के तारीफ करते पोतियों का उल्लेख करते । किस प्रकार पोतियाँ उनके साथ खेलती हैं इसका वर्णन करते । जो भी उनसे मिलता यह सोचता कि कर्नल स्वामी तो भाग्यशाली है, जिसे एक संपन्न परिवार में रहने का भाग्य प्राप्त है । किंतु सत्य इससे विपरीत था । अपनी संपत्ति न देने के लिए उन्हें बच्चों से मार खाकर लहूलुहान भी होना पड़ा था । बेटों

को पिता की संपत्ति में हिस्सा चाहिए था जिसे पा कर वह अपनी अलग दुनिया बसाना चाहते थे, किंतु उस अलग दुनिया में दूर–दूर तक पिता के लिए कोई स्थान नहीं था । उनके जीवन में बहुत दुःख था, किंतु हमेशा मुख पर हर्ष की भावना रखने वाले कर्नल स्वामी दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते । अकेले रहते, अकेले जीवन व्यतीत करते और एक दिन हृदयाघात के कारण वह दुनिया के झंजट से मुक्ति तो पा लेते हैं, परंतु आत्मा को मुक्ति देने के लिए उनकी संतान सही समय पर नहीं पहुँच पाती । उनके पडोसियों से कर्नल स्वामी की कहानी जानकर बाबू जसवंत सिंह को तीव्र आघात होता है, साथ ही उनकी संतानों पर क्रोध प्रकट करते हुए वह कहते हैं– ''ऐसी औलादों से तो निपूत भला ।"[18]

यह केवल उपन्यास में आने वाले पात्र नहीं है । यह पात्र हमारे समाज में हमारे घर में भी उपस्थित है । बेटे के शादी के बाद परिवार में बहुत कुछ बदल जाता है । किंतु उस बदलाव में माता–पिता को कभी अनदेखा कर दिया जा रहा है । उन्हें निरपयुक्त वस्तु के रूप में देखा जाता है । एक घर जिसे अपने खून पसीने से बनाकर अपनी पूरी उम्र बिता देते हैं, बच्चों की खूशी के लिए पूरा जीवन संघर्ष करते हैं, फिर एक दिन अपने ही घर में पराए होने का अनुभव करते हैं । आजकल शीघ्रता से वृद्धाश्रम में बढोतरी हो रही है । जब संतान मासूम होती है तब माता–पिता संतान की हर गलती को क्षमा कर देते हैं । परंतु संतान वृद्ध माता–पिता की छोटी सी गलती पर उन्हे घर से ही बाहर निकाल देती हैं । 21 वीं सदी के अनेक उपन्यास है जिसमें वृद्धों की दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है । यदि हर संतान अपने दायित्व के प्रति समर्पित हो तथा वृद्ध माता–पिता के प्रति सम्मान का भाव रखकर उनकी देखभाल करें करें तो संसार में सभी परिवार सुख, समृद्धि से पूर्ण हो जाए तथा कोई वृद्धाश्रम न बनें और वृद्धाश्रम बने तो केवल उनके लिए ही सीमित हो जो वृद्ध अकेले हैं अथवा जिनका इस संसार में कोई कोई नहीं है । उपरोक्त आलेख द्वारा वृद्धों के कठोर जीवन एवं परिवार एवं समाज में उनकी दयनीय स्थिति को साहित्य के माध्यम से उजागर किया गया है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ दामोदर खड़से – भगदड़, पृ 11
2 वही, पृ 21
3. वही, पृ 31
4. वही, पृ 31
5. वही, 63
6. वही, पृ 64 –
7. नासिरा शर्मा – कुइयाँजान, पृ 118
8. वही, पृ 226
9. वही, पृ 170
10.वही, पृ 171
11. वही, पृ 171
12. चित्रा मुद्गल – गिलिगडु, पृ 11
13. वही, पृ 14
14. वही, पृ 39
15. वही, पृ 40

16. वही, पृ 60

17. वही, पृ 23

18. वही, पृ 138

आधार ग्रंथ सूची :

भगदड़ भावना प्रकाशन 2015

कुइयाँजान सामयिक प्रकाशन 2017

गिलिगडु सामयिक प्रकाशन 2019

साहित्याकाश